सुबह तक

वर्ष 1 अंक 9 20.10.2004

सावरकर का मुद्दा भी भाजपा को कुर्सी नहीं दिला पाया

सावरकर के जिस मुद्दे को लेकर शिव सेना और भाजपा ने महाराष्ट्र चुनाव के इस घमासान युद्ध में अपनी सेना को उतारी थी परन्तु उसी सेना के हाथों में उनकी बूरी तरह से हार हुई है।

महाराष्ट्र विधान सभा चुनाव में फिर से सत्ता पर काबिज हुई कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने आखिरकार यह सिद्ध कर दिखलाया है कि महाराष्ट्र की जनता उसी के साथ है न कि देश भक्ति के नाम सावरकर के आत्म–सम्मान पर घटिया स्तर की राजनीति करने वाले भगवावादियों के साथ हैं।

यह और बात है कि कल तक जो राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी श्रीमती सोनिया गांधी के प्रभाव के चलते, कांग्रेस पार्टी में विलय की बात सोच रहे हैं आज उसी पार्टी को कांग्रेस से मिली बढ़त ने स्वयं अपनी पार्टी की ओर से मुख्य मंत्री पद के लिए दावा प्रस्तुत करने पर विवश कर दिया है। हालांकि चुनाव से पूर्व हुए समझौता में कांग्रेस पार्टी का ही नेता को मुख्यमंत्री पद देने पर आम सहमति हो चुकी थी।

शिवसेना और भाजपा भले ही महाराष्ट्र के इस विधान सभा चुनाव में अपनी हार की कोई वजह बतलाये परन्तु हकीकत में सावरकर प्रकरण ने उन्हें ले डूबा है

केन्द्रीय पैट्रोलयिम मंत्री मणिशंकर अय्यर के सावरकर पर दिये गये बयान पर उठे विवाद को भाजपा और उसकी सहयोगी घटक शिवसेना और उसमें अंडमान को घसीटा गया है। यहाँ पर जिस तरह की फाईव स्टार आंदोलन का ड्रामा रचा गया उससे भी उनकी घटिया मानसिकता का भी पता चलता है।

शिवसेना के सुप्रिमो बाल ठाकरे ने मणिशंकर अय्यर के प्रोटेस्ट व नट आउट पर जूता मार कर अपनी हार का रास्ता साफ कर दिया था। महाराष्ट्र की जनता भी इन लोगों को इनकी औकात दिखलायी है कि वे वर्तमान युग में रहते और इस तरह की घटिया हरकत सहन नहीं करेंगे भले क्यों न अपना कोई हो।

वास्तव में लोकसभा में मिली हार ने भाजपा को विचलित कर दिया। सत्ता की मुख ने उसे महाराष्ट्र के चुनाव में अपना सब कुछ दावं में लगाना पढ़ा और सावरकर के मुद्दे को सुषमा स्वराज ने अस्तित्व के संघर्ष जोड़ लिया। यहाँ तक उमा भारती की तिरंगा रैली भी इस चुनाव को प्रभावित कर पाने में विफल रहा।

इस चुनाव में शरत पावर का कद इतना अधिक बढ़ गया कि उसे अब कम करने की किसी में हिम्मत नहीं है इससे केन्द्र सरकार में उसका प्रभाव पढ़ा। शरत पवार राजनीति दावं पेंच का ऐसा खिलाड़ी है जिसे हरा पाना असाना नहीं है। महाशय नेता फिर से महाराष्ट्र की राजनीति में हावी हो गया है।

रोचक खबरें

दुनिया की सबसे छोटी मछली

सिडनी।

ऑस्ट्रेलिया के विज्ञानियों ने दुनिया की सबसे छोटी मछली पकड़ने का दावा किया है। सिडनी स्थित ऑस्ट्रेलियन म्यूजियम की ओर से कहा गया है कि स्टाउट इनफैंट फिश इतनी छोटी है कि एक किलोग्राम वजन के लिए दस लाख से भी ज्यादा मछलियों की आवश्यकता होगी। फिलहाल इसे दुनिया की सबसे छोटी और हल्के मेरूदंड वाले प्राणी के तौर पर दर्ज करवाने की कवायद चल रही है। इस मछली को ऑस्ट्रेलियाई विज्ञानियों ने सबसे पहले 1979 में खोज निकाला था, लेकिन अब तक इसका वर्गीकरण नहीं किया गया था। अब इसे औपचारिक तौर पर शिंडलेरिया ब्रेविपिकिस नाम दिया गया है। इस प्रजाति के नर मछलियों की लम्बाई केवल 7 मिलीमीटर है वहीं मादा मछलियों की लंबाई 8.4 मिलीमीटर होती है। वर्तमान में दुनिया की सबसे छोटे मेरूदंडी प्राणी के तौर पर छोटी गोबी मछली का नाम दर्ज है। इसके नर की लंबाई 8.6 मिलीमीटर और मादा की लंबाई 8.9 मिलीमीटर है। स्टाउट इनफैंट फिश धागे की तरह है जिसकी आंखें शरीर की तुलना में काफी बड़ी है। यह ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी समुद्र तट पर ही पाई जाती है। इसे ऑस्ट्रेलिया की रिकॉर्ड्स ऑफ द ऑस्ट्रेलियन म्यूजियम के वॉल्यूम 56 नंबर–2 में नई प्रजाति के तौर पर दर्ज किया गया है।

अमर होने की चाहत में जान गई

दार–ए–सलम।

अमर होने की शक्ति प्राप्त करने की चाह में एक लुटेरें को अपनी जान गंवानी पड़ी। दरअसल, तंजानिया का यह लुटेरा एक ऐसी अजेय शक्ति हासिल करना चाहता था जिससे उस पर न गोली का असर हो और न धारदार हथियार का। यह शक्ति प्राप्त करने के चक्कर में वह एक ओझा के पास जा पहुंचा। ओझा ने उसके शरीर के कई हिस्सों को काट दिया और अधिक मात्रा में खून बहने की वजह से उसकी मौत हो गई। बेमौत मारा गया पश्चिमी तंजानियाई लुटेरा कुसूल गांव के लुटेरों के गिरोह का वह सदस्य था।

गुद्द – गुद्दी

सन्ता बन्ता और..

संता (बंता से)– मै विवाह इसलिए नही करना चाहता हूं क्योकि मुझे स्त्रियो से बहुत डर लगता है।

बंता (संता से)– ऐसी बात है, तब तो तुरंत विवाह कर डालो। मै तुम्हे अपने अनुभव से कहता हूं कि विवाह के बाद एक ही स्त्री का भय रह जाता है।

चिंटू (पिताजी से)– क्या आप हाथी से डरते है?
पिताजी (चिंटू से)– नही बेटा।
चिंटू – तो क्या आप शेर से डरते है?
पिताजी – नही।
चिंटू – अजगर से?
पिताजी – नही।
चिंटू – यानी आप मम्मी के सिवाय किसी से नही डरते।

शेष पृष्ठ 1 से

दुनिया की सबसे मंहगी...

परन्तु इसके बाद भी प्रशासन ने इस मामले को न केवल सरकार को बल्कि देश की जनता को पाषण युग कालिन इस आदिम जनजाति के मामले में अंधेरे में रखा है।

अभी हाल ही में 'सुबह तक' के एक दल को कदमतला के यात्रा के दौरान जारवाओं के मामले में कई चौंकाने वाले तथ्यों का पता चल पाया है। कदमतला उप स्वास्थ्य केन्द्र के छोटे से अस्पताल के परिसर में स्थित एक छोटे से आकार वाले झोपड़ी नुमा जारवा वार्ड का निर्माण पिछले कुछ वर्षों में किया गया था। इस बारे में बतलाया जाता है कि झोपड़ी के निर्माण पर पांच लाख से अधिक का खर्च आया है। अगर इस बारे में जरा भी सच्चाई है तो इससे पता चल जाता है कि जारवाओं के मामले में कितने बड़े पैमाने में लूट–खसोट मची हुई है। जारवाओं के इलाकों में आदिम जनजाति कल्याण समिति का अपना काला सम्राज्य है। उपराज्यपाल प्रो. राम कापसे ने एक राष्ट्रीय स्तर की जारवाओं के मामले के सम्बंध में आयोजित गोष्ठी में इस समिति के पुर्नगठन में दिए गए आश्वासन के बाद भी आज तक कुछ नहीं हो पाया।